

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन

¹. रचना पांडेय शोधार्थी, शिक्षा संकाय कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

². प्रोफेसर डॉ लुभावनी त्रिपाठी, प्रोफेसर शिक्षा विभाग कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उनकी शैक्षिक उपलब्धि, सीखने की क्षमता तथा बौद्धिक विकास को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैं। प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों को नियमित अध्ययन, समय प्रबंधन तथा एकाग्रता विकसित करने में सहायता प्रदान करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया। कुल 800 विद्यार्थियों (400 शासकीय तथा 400 अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी) से आँकड़े संकलित किए गए। अध्ययन आदतों के मापन के लिए डॉ. सी. पी. माथुर द्वारा निर्मित “अध्ययन आदत एवं अध्ययन अभिवृत्ति परीक्षण (टी.एस.एच.ए.)” का उपयोग किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण की सहायता से किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया जाता है। यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को समझने तथा उन्हें विकसित करने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द: अध्ययन आदत, माध्यमिक विद्यार्थी, शासकीय विद्यालय, अशासकीय विद्यालय, तुलनात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास का आधार होती है। शिक्षा की प्रभावशीलता काफी हद तक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर निर्भर करती है। अध्ययन आदतें उन व्यवहारों तथा प्रक्रियाओं का समूह हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करते हैं, अध्ययन करते हैं तथा अपने शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति करते हैं। नियमित अध्ययन, समय का उचित प्रबंधन, एकाग्रता, पुनरावृत्ति तथा योजनाबद्ध अध्ययन जैसी आदतें विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विद्यालय विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक है। शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण, संसाधनों, शिक्षण पद्धतियों तथा अनुशासन व्यवस्था में अंतर पाया जाता है। इन अंतरों के कारण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में भी भिन्नता देखी जा सकती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का वह चरण है जहाँ उनकी अध्ययन आदतें स्थायी रूप से विकसित होती हैं और भविष्य की शैक्षिक दिशा निर्धारित होती है। यदि इस स्तर पर विद्यार्थियों में प्रभावी अध्ययन आदतों का विकास किया जाए तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सुधार किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी उद्देश्य से किया गया है कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में विद्यमान अंतर का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सके।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

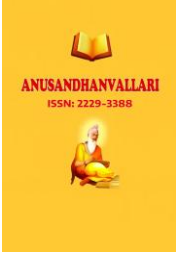
कौर (2016) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करते हुए पाया कि प्रभावी अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

शर्मा (2018) के अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालयी वातावरण तथा शिक्षक का मार्गदर्शन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सिंह (2020) ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए पाया कि संसाधनों की उपलब्धता तथा शिक्षण वातावरण के कारण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में अंतर पाया जाता है।

पटेल (2021) ने अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन किया और पाया कि जिन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें सुव्यवस्थित होती हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है।

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन आदतें विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा विद्यालयी वातावरण इन आदतों को प्रभावित करता है।



3. शोध का उद्देश्य

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. परिकल्पना

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

5. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक शोध पद्धति का अनुसरण किया गया। शोध पद्धति किसी भी अध्ययन की आधारशिला होती है, क्योंकि इसी के माध्यम से शोध की दिशा, प्रक्रिया तथा निष्कर्षों की विश्वसनीयता निर्धारित होती है। इस अध्ययन में समस्या की प्रकृति, उद्देश्यों तथा परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शोध पद्धति का चयन किया गया। प्रस्तुत शोध की पद्धति के अंतर्गत शोध का प्रकार, जनसंख्या, नमूना, नमूना चयन की विधि, शोध उपकरण तथा आँकड़ों के विश्लेषण की विधियों का विवरण निम्नलिखित है-

5.1 शोध का प्रकार

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकार का शोध है। वर्णनात्मक शोध का उद्देश्य किसी घटना, स्थिति या समूह की वर्तमान अवस्था का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक वर्णन करना होता है। इस प्रकार के शोध में किसी चर को नियंत्रित या परिवर्तित नहीं किया जाता, बल्कि उसकी वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य अध्ययन आदतों में विद्यमान संभावित अंतर का परीक्षण किया गया है। इसलिए यह शोध तुलनात्मक प्रकृति का भी है, क्योंकि इसमें दो भिन्न समूहों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का आपसी तुलना के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध की श्रेणी में आता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए विभिन्न समूहों के मध्य विद्यमान अंतर का अध्ययन किया गया है।

5.2 जनसंख्या

किसी भी शोध में जनसंख्या से अभिप्राय उस व्यापक समूह से होता है जिसके अंतर्गत अध्ययन से संबंधित सभी संभावित इकाइयाँ सम्मिलित होती हैं। दूसरे शब्दों में, जिस समूह के संबंध में शोधकर्ता निष्कर्ष प्राप्त करना चाहता है, वही समूह शोध की जनसंख्या कहलाता है।

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थी हैं। माध्यमिक स्तर से आशय उन विद्यालयों से है जहाँ कक्षा 9 एवं कक्षा 10 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। इस स्तर के विद्यार्थी अध्ययन आदतों के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था में होते हैं, क्योंकि इसी चरण में उनकी अध्ययन शैली तथा सीखने की प्रवृत्तियाँ विकसित होती हैं।

अतः प्रस्तुत शोध में रायपुर जिले के शासकीय तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में स्वीकार किया गया।

5.3 नमूना

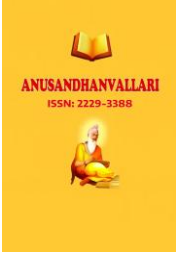
शोध में संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना समय, श्रम तथा संसाधनों की दृष्टि से संभव नहीं होता। इसलिए जनसंख्या में से एक प्रतिनिधिक समूह का चयन किया जाता है जिसे नमूना कहा जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या में से एक संतुलित एवं प्रतिनिधिक नमूने का चयन किया गया। इस शोध में कुल 800 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में सम्मिलित किया गया। इनमें से 400 विद्यार्थी शासकीय विद्यालयों से तथा 400 विद्यार्थी अशासकीय विद्यालयों से चयनित किए गए।

नमूने में छात्र एवं छात्राओं की संख्या को भी संतुलित रखा गया ताकि अध्ययन के परिणाम अधिक विश्वसनीय एवं प्रतिनिधिक हो सकें। इस प्रकार चयनित नमूना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करता है।

5.4 नमूना चयन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि का उपयोग किया गया।



इस प्रक्रिया में सर्वप्रथम रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों को विद्यालय प्रबंधन के आधार पर दो स्तरों में विभाजित किया गया-

1. शासकीय विद्यालय
2. अशासकीय विद्यालय

इसके पश्चात प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक पद्धति के माध्यम से विद्यालयों का चयन किया गया। चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को नमूने में सम्मिलित किया गया। नमूना चयन करते समय यह सुनिश्चित किया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों का संतुलित प्रतिनिधित्व हो तथा छात्र एवं छात्राओं की संख्या भी लगभग समान रहे। इस प्रकार स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि के उपयोग से जनसंख्या के विभिन्न स्तरों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया।

5.5 शोध उपकरण

किसी भी शोध कार्य में तथ्यों के संकलन के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। शोध उपकरणों के माध्यम से ही शोधकर्ता अध्ययन से संबंधित आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मापन के लिए डॉ. सी. पी. माथुर द्वारा निर्मित अध्ययन आदत एवं अध्ययन अभिवृत्ति परीक्षण का उपयोग किया गया।

यह एक मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण है जिसका उपयोग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, अध्ययन तकनीकों तथा शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण का आकलन करने के लिए किया जाता है। इस परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार के विभिन्न पक्षों जैसे-समय प्रबंधन, एकाग्रता, अध्ययन की नियमितता तथा अध्ययन पद्धति—का मूल्यांकन किया जाता है।

यह उपकरण विश्वसनीयता एवं वैधता की दृष्टि से उपयुक्त माना जाता है तथा विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का वैज्ञानिक मापन करने के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

5.6 आँकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढंग से किया गया। सर्वप्रथम विद्यार्थियों से प्राप्त तथ्यों को वर्गीकृत किया गया तथा सारणियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पना के अनुरूप उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करते हुए आँकड़ों का विश्लेषण किया गया।

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया-

1. माध्य

माध्य का उपयोग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के औसत स्तर को ज्ञात करने के लिए किया गया। इसके माध्यम से विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत स्कोर का औसत मान प्राप्त किया गया।

2. मानक विचलन

मानक विचलन का उपयोग विद्यार्थियों के प्राप्त अंकों के प्रसरण या फैलाव को ज्ञात करने के लिए किया गया। इसके माध्यम से यह समझने में सहायता मिली कि विद्यार्थियों के अध्ययन आदत स्कोर औसत मान से कितना विचलित हैं।

3. स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत स्कोर के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच करने के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण का उपयोग किया गया। इस परीक्षण के माध्यम से यह निर्धारित किया गया कि दोनों समूहों के माध्यों के मध्य प्राप्त अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है या नहीं।

इस प्रकार उपर्युक्त सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से संकलित आँकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर शोध की परिकल्पना का परीक्षण किया गया।

6. विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t-मूल्य	p-मूल्य
शासकीय विद्यालय	400	36	5.03	13.24	0.000
अशासकीय विद्यालय	400	31.43	4.73		

तालिका 6 में शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के तुलनात्मक विश्लेषण के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। इस विश्लेषण के लिए दोनों समूहों के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत स्कोर का माध्य, मानक विचलन तथा स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के माध्यम से प्राप्त t-मूल्य का उपयोग किया गया है।

तालिका से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का माध्य 36 प्राप्त हुआ है तथा मानक विचलन 5.03 है। इससे यह संकेत मिलता है कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अध्ययन आदत का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया है तथा उनके प्राप्त अंकों में औसत के आसपास मध्यम स्तर का प्रसरण देखा जाता है।

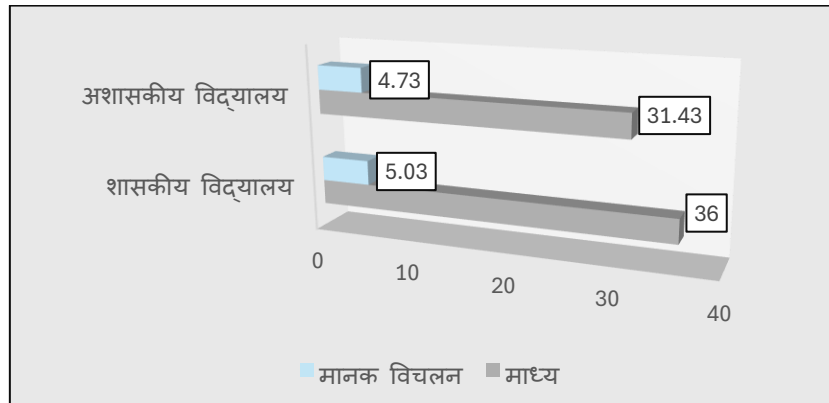
दूसरी ओर अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का माध्य 31.43 तथा मानक विचलन 4.73 प्राप्त हुआ है। इसका अर्थ यह है कि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का औसत स्तर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अपेक्षाकृत कम पाया गया है। मानक विचलन का मान यह भी दर्शाता है कि इन विद्यार्थियों के अध्ययन आदत स्कोर में भी कुछ प्रसरण विद्यमान है, किंतु यह प्रसरण अत्यधिक नहीं है।

दोनों समूहों के माध्यों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच करने के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण का उपयोग किया गया। गणना के अनुसार t-मूल्य 13.24 प्राप्त हुआ है, जो कि काफी उच्च है। साथ ही प्राप्त p-मूल्य 0.000 है, जो निर्धारित 0.05 स्तर से कम है।

चूँकि प्राप्त p-मूल्य 0.05 से कम है, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है। इसका तात्पर्य यह है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में वास्तविक अंतर विद्यमान है और यह अंतर केवल संयोगवश नहीं है।

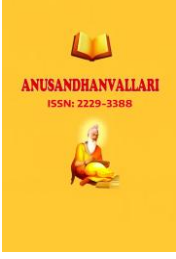
इस प्रकार प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई है। यह अंतर संभवतः विद्यालयी वातावरण, अध्ययन संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षण पद्धति, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध तथा विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि जैसे विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक कारकों के कारण उत्पन्न हो सकता है।

अतः प्रस्तुत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय के प्रकार के अनुसार विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में अंतर पाया जाता है, जो विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार तथा उनके शैक्षिक विकास को प्रभावित कर सकता है।



ग्राफ क्रमांक 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत के माध्य एवं मानक विचलन का तुलनात्मक निरूपण



7. निष्कर्ष

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया जाता है। यह अंतर विद्यालयी वातावरण, शिक्षण पद्धति, शैक्षिक संसाधनों तथा पारिवारिक समर्थन जैसे कारकों के कारण उत्पन्न हो सकता है। अध्ययन आदतों विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

8. शैक्षिक निहितार्थ

1. विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्रभावी अध्ययन तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
2. विद्यार्थियों में समय प्रबंधन तथा नियमित अध्ययन की आदत विकसित करने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
3. शिक्षकों को विद्यार्थियों को अध्ययन के प्रति प्रेरित करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।
4. विद्यालयों में पुस्तकालय तथा अध्ययन संसाधनों को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

9. भावी शोध के लिए सुझाव

1. भविष्य में अन्य राज्यों के विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए व्यापक अध्ययन किया जा सकता है।
2. अध्ययन आदतों का संबंध शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा से भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

10. संदर्भ

- [1] कौर, आर. (2016). माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन. *शिक्षा शोध पत्रिका*, 12(2), 45–52।
- [2] शर्मा, वी. (2018). अध्ययन व्यवहार और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध. *भारतीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका*, 14(1), 33–41।
- [3] सिंह, पी. (2020). शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन. *शिक्षा शोध जर्नल*, 18(3), 65–72।
- [4] पटेल, एम. (2021). अध्ययन आदत और शैक्षिक सफलता. *अंतरराष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका*, 9(2), 55–63।
- [5] वर्मा, एस. (2017). माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. *भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, 11(1), 21–29।
- [6] गुप्ता, आर., एवं शर्मा, पी. (2019). विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव. *शिक्षा एवं समाज*, 15(2), 48–56।
- [7] मिश्रा, डी. (2020). अध्ययन आदत और सीखने की प्रभावशीलता का विश्लेषण. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 7(1), 39–46।
- [8] त्रिपाठी, ए. (2018). माध्यमिक विद्यार्थियों में अध्ययन व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण. *शिक्षा मनोविज्ञान जर्नल*, 10(2), 72–80।
- [9] यादव, एस., एवं वर्मा, एन. (2021). अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन. *समकालीन शिक्षा शोध पत्रिका*, 13(1), 61–69।
- [10] जैन, आर. (2019). विद्यार्थियों की अध्ययन प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन. *शिक्षा विकास पत्रिका*, 16(2), 54–62।
- [11] शुक्ला, पी. (2022). माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सामाजिक कारकों का प्रभाव. *भारतीय शिक्षा अध्ययन पत्रिका*, 19(1), 44–52।
- [12] कुलश्रेष्ठ, एस. (2017). अध्ययन आदत और शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन. *शिक्षा अनुसंधान जर्नल*, 12(3), 58–66।
- [13] अग्रवाल, एम., एवं गुप्ता, एस. (2020). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का संबंध. *अंतरराष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान पत्रिका*, 8(2), 27–35।
- [14] तिवारी, ए. (2021). अध्ययन आदतों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 17(2), 49–57।
- [15] दास, पी., एवं कुमार, आर. (2022). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन. *शिक्षा एवं विकास जर्नल*, 20(1), 37–45।